HIS ONLY LOVE

HARISINGH GOUR

HIS ONLY LOVE

BY

HARI SINGH GOUR

HIS ONLY LOVE

BY

HARI SINGH GOUR

Edited by
Laxmi Pandey

ANUUGYA

No part of this book may be reproduced or utilized in any form or
by any means electronic or mechanical including photo-copying,
recording or any information or storage and retrieval system
without the written permission of the publisher and Editor.

© Publisher

First Anuugya Edition 2024

ISBN 978-81-972352-8-3

Published by
Anuugya Books
1/10206, Lane No. 1E, West Gorakh Park, Shahdara, Delhi-110032
e-mail: anuugyabooks@gmail.com • salesanuugyabooks@gmail.com
Ph. : 7291920186, 9350809192 • www.anuugyabooks.com

Cover Design
Asrar Ahmed

Printed in
Arpit Printographers

HIS ONLY LOVE
Novel *by* ***Dr. Harisingh Gour*** *edited by* ***Dr. Laxmi Pandey***

निवेदन–

दायित्व पूर्ति का प्रयास

'HIS ONLY LOVE' डॉ. हरीसिंह गौर का एकमात्र उपन्यास है जो 1929 में Henry Walker London से प्रकाशित हुआ था। इसका यह संस्करण लगभग 95 वर्ष बाद पुनः प्रकाशित हो रहा है। उपन्यास महत्वपूर्ण है और तत्कालीन भारतीय समाज की विचारधारा और गतिविधियों की झाँकी प्रस्तुत करता है। यह प्रेम और विवाह की व्याख्या प्रस्तुत करता है। इसके पात्र हिम और शाहिंदा के प्रेम और विवाह के बीच का उतार-चढ़ाव भरा समय भौतिक और आध्यात्मिक प्रेम की सत्यता और विकृतियों पर प्रकाश डालता है। यह सुखान्त उपन्यास है। अंतर्जातीय एवं अंतर्देशीय पात्रों के प्रेम एवं विवाह सम्बन्धी दृष्टिकोण को रोचक शैली में प्रस्तुत करने वाला यह पठनीय उपन्यास है।

यहाँ गौर साहब एक बड़े साहित्यकार के रूप में दिखाई देते हैं। भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के पोषक, एक उत्तरदायित्वपूर्ण सामाजिक व्यक्ति, सहृदय-सरल प्रेमी और विवेकवान पुरुष के रूप में उनका औदात्य प्रभावित करता है।

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में 'जवाहर लाल नेहरू पुस्तकालय' है जिसमें एक कक्ष 'गौर कक्ष' के नाम से जाना जाता है। इसमें गौर साहब का निजी पुस्तकालय है तथा उनका सम्पूर्ण साहित्य भी सुसज्जित एवं सुरक्षित है। विश्वविद्यालय के लम्बे-चौड़े परिसर में यह पुस्तकालय गौर साहब के प्रिय स्थलों में से एक है। इस पुस्तकालय के गौर कक्ष में उनकी अन्य पुस्तकों की तरह ही इस पुस्तक की भी फोटोकॉपी को बाइंड करके रखा गया है।

गौर साहब का हृदय सागर सा विशाल और गहन, मानवीय संवेदनाओं से परिपूर्ण था। उसमें प्रेम की गंगा और ज्ञान की सरस्वती का अद्वैत था। उनके मातृभूमि के प्रति प्रेम और श्रद्धा की मिसाल यह विश्वविद्यालय है और वे तमाम कानून जो जनकल्याण के लिए, लोकमंगल के लिए उन्होंने बनाए और बनवाए।

इस पुस्तक के एक-एक शब्द को प्रूफ रीडिंग करते हुए बार-बार मैंने पढ़ा। यह मेरे लिए भावुकता के क्षण हैं और एक दायित्व की पूर्ति कर सकी, जैसा अनुभव मुझे रोमांचित भी कर रहा है। कुलपिता डॉ. गौर साहब जहाँ भी हों उनकी आत्मा सुखी हो, वे आश्वस्त हों ईश्वर से यही प्रार्थना करती हूँ।

साहित्यकार के लिए उसकी हर पुस्तक उसकी संतान की तरह होती है। अपनी संतान को जीवित, सुरक्षित देखकर उसे आत्मसंतोष की अपार अनुभूति होती है। देह नश्वर है, लेकिन आत्मा अजर-अमर होती है। इसलिए देह बदल भी गई हो तो भी गौर साहब की आत्मा इस सुख की अनुभूति अवश्य कर लेगी।

'सागर विश्वविद्यालय' की स्थापना 1946 में 18 जुलाई को हुई थी। इसके संस्थापक कुलपति डॉ. हरीसिंह गौर ने निजी धनराशि 2 करोड़ रुपयों का दान कर इस विश्वविद्यालय को स्थापित किया और दानवीर कहलाए। वे नहीं चाहते थे कि इस विश्वविद्यालय का नाम कभी बदला जाए किन्तु 1949 में गौर साहब के देहावसान के अनेक वर्षों बाद राजनैतिक दुराग्रहों के चलते इसका नाम डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय कर दिया गया। 2009 से पूर्व यह प्रादेशिक विश्वविद्यालय था उसके बाद यह केन्द्र सरकार के अधीन हो गया।

गौर साहब की किसी भी पुस्तक की मूल प्रति या पांडुलिपि मुझे इस पुस्तकालय में प्राप्त नहीं हुई। बाइंड करवा कर रखी गई पुस्तकें पुस्तकालय से बाहर नहीं ले जाई जा सकतीं, इसलिए शोधार्थी, सामान्य विद्यार्थी और पाठकों के लिए यह सुलभ नहीं है। इसी कारण अब तक इन पर शोध-कार्य नहीं हो सका। मन यह सोचकर बेचैन और उदास हो जाता है कि अगर यह फोटो कॉपी वाली प्रतियाँ भी फट जाएँ या खो जाएँ तो क्या इस महान शिक्षाविद्, न्यायविद्, कानूनविद्, दार्शनिक, दानवीर, संवेदनशील मनुष्य और साहित्यकार का यह साहित्य खो जाएगा क्योंकि इस पुस्तकालय में यह जैसा और जिस रूप में है, बस यही है और कहीं नहीं, जबकि गौर साहब दिल्ली और नागपुर विश्वविद्यालयों के भी कुलपति रहे हैं।

यह तो निश्चित है कि जब तक यह पृथ्वी है, संसार है, जीवन है, हमारा भारत अमर रहेगा। भारत में बुंदेलखंड और उसमें स्थित यह शहर सागर भी अमर रहेगा। पीढ़ियाँ आएँगी, पढ़ेंगी और जाएँगी, पुरानी इमारतों की जगह नयी इमारतें बनेंगी लेकिन इन भौतिक परिवर्तनों के साथ डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय अमर रहेगा। तब, उनका साहित्य भी उनके नाम के साथ सुरक्षित होना चाहिए युगों तक इसे भी अमर होना चाहिए। अनेक निद्राहीन और बेचैन रातों के चिंतन-मनन के बाद यह निर्णय ले लिया कि अब और किसी से आशा-अपेक्षा और प्रतीक्षा नहीं... मैं स्वयं इसे पुनः प्रकाशित कराऊँगी। कानून की पुस्तकों की चिन्ता नहीं क्योंकि उनके अनेक संस्करण कानूनविदों द्वारा लाए जा चुके हैं। वे पुस्तकें उनके लिए मील का पत्थर हैं और हर क्षण उनका पथ-प्रशस्त करती हैं। केवल साहित्य समाज और दर्शन की पुस्तकों की चिन्ता है।

सामान्य जन हों या साहित्यकार उनकी धन-धरती की विरासत को सम्हालने वाले बहुत होते हैं किन्तु साहित्यकार की वास्तविक विरासत उसके साहित्य को सम्हालने का कार्य या तो उनके आत्मज करते हैं या मानस संतानें या कोई संस्था...। आत्मजों ने तो अब तक कुछ किया नहीं। संस्था यानी विश्वविद्यालय ने भी अब तक इसे फोटो कॉपी के रूप में ही सम्हाला है। वर्तमान में संस्थापक कुलपति डॉ. हरीसिंह गौर की प्रतिनिधि के रूप में प्रो. नीलिमा गुप्ता कुलपति के पद पर विराजमान हैं। वे अत्यन्त विदुषी, पारखी दृष्टि सम्पन्न, परिश्रमी, धैर्यवान, सत्य निष्ठावान, श्रेष्ठ संवेदनशील मनुष्य और प्रशासक हैं। उन्होंने गौर साहित्य के प्रकाशन के सम्बन्ध में उत्साह प्रकट किया है लेकिन इस पद की अपनी व्यस्तताएँ हैं। क्या पता कब हो, हो कि न हो, अब और प्रतीक्षा नहीं। जीवन अगर नश्वर है तो मेरे जीवन का भी क्या भरोसा है। मैं भी तो गौर साहब की मानस संतान हूँ यह दायित्व मेरा भी है। फिर इस विश्वविद्यालय में अध्यापक होने के नाते इस संस्था की एक सदस्य हूँ तो संस्था की ओर से सौंपा गया अनकहा अघोषित दायित्व भी मान लूँ। यह सोचकर मैंने गौर साहब की छः पुस्तकों को सम्पादित कर पुनः प्रकाशित करने का बीड़ा उठाया। इस दायित्व पूर्ति के प्रयास में 'Random Rhymes', 'Stepping Westward', 'Seven Lives', 'Fact & Fancies' के नए संस्करण प्रकाशित करवाने के बाद अब यह उपन्यास 'His Only Love' को भी प्रकाशित करवा रही हूँ। चूँकि मैं हिन्दी भाषा और साहित्य की अध्यापक हूँ। स्कूल में अंग्रेजी एक विषय के रूप में पढ़ी और अब तक कुछ स्वाध्याय के चलते अंग्रेजी पढ़ने और समझने में बहुत अधिक परेशानी नहीं होती। गौर साहब का वैदुष्य विराट और गहन है। इस पुस्तक की प्रूफ रीडिंग (अशुद्धि शोधन) करते हुए मैंने संस्कृत लोकोक्ति 'मक्षिका स्थाने मक्षिका' का परिपालन किया। सचेत और सतर्क रहते हुए सावधानी के साथ जो शब्द जो पंक्ति जैसी जहाँ है उसे वैसे ही और वहीं रखने का प्रयास किया है। इस पुस्तक के प्रथम बार प्रकाशित होने के समय इसका जो कवर, प्रकाशन का पहचान चिन्ह आदि थे, उन्हें भी सहेज दिया ताकि इसका मूल रूप भी बचा रहे।

अन्त में एक करबद्ध प्रार्थना है उस पीढ़ी से जो इस पुस्तक को आज से 40-50 वर्ष बाद देखेगी, पढ़ेगी। यह संस्करण 40-50 वर्ष तक तो चल सकता है उसके बाद जो पीढ़ी इसे देखे पढ़े वह तत्कालीन प्रशासन से निवेदन कर या स्वयं प्रयास कर (मेरी तरह) इसका नया संस्करण छपवा दे, प्रकाशित करवा दे और जिस तरह मैंने इस संस्करण में मूल पुस्तक के कवर, प्रकाशन

का नाम-पहचान चिन्ह सहेजा है, वह भी सहेज दे उस संस्करण में। मैंने जो अगली पीढ़ी से यह प्रार्थना की है, इसे भी सहेज दे ताकि यह सिलसिला चलता रहे और गौर बब्बा, Our grandfather, कुलपिता गौर साहब के नाम के इस विश्वविद्यालय में उनकी भावनाओं और विचार दृष्टि से सम्पन्न-समृद्ध यह साहित्य भी अमरता का पथ तय करता रहे। मैं तब नहीं रहूँगी लेकिन उस प्रकाशनकर्ता के लिए मेरा शुभाशीष और मंगलकामनाएँ बनी रहेंगी।

पाठकों को यह प्रार्थना अजीब सी लगे, यह हो सकता है। लेकिन गौर साहब के साथ जिनका सत्य निष्ठा पूर्ण आत्मीय रिश्ता है, उन्हें यह गम्भीर दायित्व की पूर्ति की तरह ही लगेगा। अपना परिचय फ्लैप पर नहीं देना चाहती थी किन्तु प्रकाशन सामग्री की प्रामाणिकता और संपादक के उत्तरदायित्व की दृष्टि से यह देना आवश्यक लगा।

अनुज्ञा बुक्स दिल्ली के प्रकाशक सुधीर वत्स जी के प्रति जितनी कृतज्ञता व्यक्त करूँ कम है। उन्होंने मेरी इच्छा का मान रखते हुए गौर साहित्य के प्रकाशन की सहर्ष स्वीकृति दी। शुद्ध टंकण के लिए मनोज कुमार जी का परिश्रम सराहनीय है उन्हें हृदय से धन्यवाद देती हूँ। इस कार्य के दौरान प्रो. सुरेश आचार्य का प्रोत्साहन मानसिक संबल बना रहा, उन्हें प्रणाम निवेदन करती हूँ। आशा है पाठक मेरे प्रयास को सकारात्मकता के साथ स्वीकार करेंगे।

10.03.2024

लक्ष्मी पाण्डेय
9753207910

पूर्व संस्करण से

HIS ONLY LOVE

BY

SIR HARI SINGH GOUR

LONDON
HENRY WALKER
NINE JOHN STREET ADELPHI

Printed in Great Britain
at the BURLEIGH PRESS, Lewin's Mead, BRISTOL.

पूर्व संस्करण से

CONTENTS

निवेदन – दायित्व पूर्ति का प्रयास 5

CHAPTERS–

1. Himm's Early Life 13
2. Himm Revisits Nagina 20
3. Siege to Himm's Heart 24
4. Marriage and Afterwards 28
5. Rita Before Her Marriage 30
6. Himm and His Neighbours 34
7. Stella's World Voyage 47
8. Jaffer's Courtship 53
9. Rita Marries Jaffer 59
10. Stella and The Count 65
11. Stella's First Morning 74
12. Penny Fortune Teller 81
13. Return Home 84
14. Preparations for The Second ID 87
15. Stella and The Professor 91
16. Imam's Homecoming 94
17. Imam's Revenge 99
18. Rita and Imam 105
19. Stella Rescues Rita 108
20. Stella Revisits Old Cronies 121
21. Imam's Bombshell 131
22. Shahinda at The Varsity 141

23. Stella Meets Shahinda 147
24. Shahinda And Himm 150
25. The Mystery Man 159
26. Untangling the Skein 168
27. Cherchez La Femme 175
28. Yusef's Lies 179
29. Himm's Dilemma 185
30. Himm at the Hospital 191
31. In Pursuit of His Dream 193
32. Mabel's Woes 201
33. Mabel's Mission 208
34. An Uninvited Tea 216
35. Mabel Courts Himm 219
36. Mabel Discloses a Secret 223
37. Shahinda's Letter 226
38. Shahinda's Rest Cure 231
39. Shahinda's Confidence 235

Chapter 1

HIMM'S EARLY LIFE

Himm is the pet abbreviation for Himmat Singh, which, in the language of Ind, means "A brave lion"—or "A lion in bravery." It was a name which the old village astrologer bestowed upon the only son of an obscure villager, who tilled his field and got out of it what little sustenance he could.

Nagina was a small hamlet in the hills of the plateau districts of India, while Rup Singh, the farmer, was a small tenant of an oppressive landlord who rackrented him.

In order to please the Sahibs who looked upon education with a favoured eye, Dhanjit Prasad Malguzar had set apart a dilapidated portion of the verandah of his shrine, to serve as the village battiashala, or primary school. The teacher was his henchman and factotum, Pandit Ishwar Das, who wrote his accounts, knew how to falsify them to his master's advantage, was an adept in the preparation of deeds, officiated as the priest accredited to the Thakur, in whose porch the village urchins mastered the arcana of reading and writing, elementary addition and subtraction.

Himm was an unruly pupil, being more fond of playing truant or practising pranks upon his Guru, who presided at the teaching stall. They were ten boys in all; but most of them, unlike Himm, were reverential to their teacher, and attentive to their slates. They used no paper, for it was scarce and dear. Slates could be washed by being spat upon, but paper would not stand that ordeal.

The course lasted three years, at the end of which the pupil